**प्रत्यक्षवाद की मूल मान्यताएँ अथवा विशेषताएँ** (Basic Assumptions or Characteristics of Positivism)

प्रत्यक्षवाद के अर्थ से स्पष्ट हो जाता है कि कॉम्ट के अनुसार प्रत्यक्षवाद अध्ययन की एक विशेष पद्धति है जिसका उद्देश्य सामाजिक घटनाओं के अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक और यथार्थ बनाना है। प्रत्यक्षवाद की प्रकृति को समझने के लिए इसकी उन मौलिक मान्यताओं अथवा विशेषताओं को समझना आवश्यक है जिनका कॉम्ट ने अपने विभिन्न लेखों में उल्लेख किया है।

(1) **सामाजिक घटनाएँ निश्चित नियमों पर आधारित**—कॉम्ट का मानना है कि जिस तरह प्राकृतिक घटनाएँ आकस्मिक रूप से घटित नहीं होतीं बल्कि कुछ निश्चित नियमों पर आधारित होती हैं, उसी तरह सामाजिक घटनाएँ भी कुछ निश्चित नियमों के द्वारा संचालित होती हैं। प्राकृतिक विज्ञानों में इन घटनाओं को प्रभावित करने वाले नियमों को अवलोकन, परीक्षण, वर्गीकरण तथा तर्क के आधार पर ज्ञात किया जाता है। यह एक प्रत्यक्षवादी अथवा वैज्ञानिक पद्धति है जिसका सामाजिक घटनाओं को संचालित करने वाले नियमों की खोज करने में भी उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार प्रत्यक्षवाद के आधार पर कॉम्ट का उद्देश्य सामाजिक घटनाओं से सम्बन्धित नियमों को ज्ञात करके समाजशास्त्र को एक वैज्ञानिक रूप देना था।

(2) **यथार्थ ज्ञान पर आधारित**—कॉम्ट का कथन है कि प्रत्यक्षवाद किसी संयोग अथवा अनुमान पर आधारित न होकर एक ऐसे यथार्थ ज्ञान से सम्बन्धित है जिसे अवलोकन तथा परीक्षण के द्वारा प्राप्त किया जाता है। यही कारण है कि इसके द्वारा किये जाने वाले अध्ययन तथा उनसे प्राप्त निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय होते हैं। चिन्तन के धार्मिक स्तर पर सामाजिक घटनाओं का विश्लेषण विश्वासों पर आधारित होता है जबकि तात्विक स्तर पर इन घटनाओं के विश्लेषण में अनुमान और नैतिक मानदण्डों को अधिक महत्व मिलने लगता है। इसके विपरीत, प्रत्यक्षवाद वह दशा है जिसमें केवल यथार्थ ज्ञान अथवा वास्तविकता को ही महत्व दिया जाता है। इस सम्बन्ध में **रॉलिन चैम्बलिस** (Rollin Chambliss) ने लिखा है कि 'प्रत्यक्षवाद काल्पनिकता की जगह वास्तविकता पर आधारित है।' प्रत्यक्षवाद की इस मान्यता से स्पष्ट होता है कि इसमें कल्पना, अनुमान अथवा नैतिक मापदण्डों का कोई स्थान नहीं है।

(3) **अध्ययन की एक वैज्ञानिक प्रणाली**—कॉम्ट ने जिस रूप में प्रत्यक्षवाद की विशेषताओं का उल्लेख किया है, उससे स्पष्ट होता है कि प्रत्यक्षवाद कोई अवधारणा (Concept) या सिद्धान्त (Theory) नहीं है बल्कि यह अध्ययन की एक वैज्ञानिक प्रणाली है। इस प्रणाली में अवलोकन, परीक्षण, वर्गीकरण तथा तार्किकता का महत्वपूर्ण स्थान है। इसका तात्पर्य है कि प्रत्यक्षवाद वह दशा है जिसमें सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने के लिए पहले उनका पक्षपातरहित होकर अवलोकन किया जाता है, फिर विभिन्न प्रकार से अवलोकन किये गये तथ्यों का परीक्षण करके घटनाओं का इस तरह वर्गीकरण किया जाता है

जिससे विभिन्न विशेषताओं की समानताओं और असमानताओं का विश्लेषण करके सामान्य नियमों को समझा जा सके। घटनाओं के सह-सम्बन्ध को समझने में तर्क का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। इससे स्पष्ट होता है कि कॉम्ट ने प्रत्यक्षवाद को अध्ययन की एक वैज्ञानिक प्रणाली के रूप में स्पष्ट किया। इस सन्दर्भ में **बोगार्डस** का कथन है कि कॉम्ट का प्रत्यक्षवाद विश्व की ओर विशुद्ध बौद्धिक ढंग से देखने से सम्बन्धित है जिसमें हमारा मस्तिष्क घटनाओं के निरीक्षण एवं वर्गीकरण पर ही केन्द्रित होता है।

(4) **तार्किकता पर बल**—तार्किक क्षमता विज्ञान की एक आवश्यक विशेषता है। यही कारण है कि कॉम्ट ने प्रत्यक्षवाद में बौद्धिक क्रियाओं को अधिक महत्व देते हुए मानव मस्तिष्क की तार्किकता की विस्तृत व्याख्या की है। कॉम्ट का मानना है कि प्रत्यक्षवादी स्तर पर मानव की बौद्धिक क्षमता इतनी विकसित हो जायेगी कि वह सभी घटनाओं के कारण और परिणाम को समझने के लिए विश्वास के स्थान पर तर्कपूर्ण विचारों का महत्व देने लगेगा। वास्तविकता यह है कि मानव प्रगति के लिए समाज का बौद्धिक विकास होना आवश्यक है। इसकी पूर्ति प्रत्यक्षवाद के द्वारा ही सम्भव है। समाजशास्त्र को भी यदि एक विज्ञान के रूप में विकसित करना है तो सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में तार्किकता पर आधारित प्रत्यक्षवादी विधि को महत्व देना आवश्यक है।

(5) **धर्म तथा विज्ञान का समन्वय**—एक प्रत्यक्षवादी होते हुए भी कॉम्ट धर्म को विज्ञान का विरोधी नहीं बल्कि सहयोगी मानते हैं। इसी कारण उन्होंने धर्म और विज्ञान के समन्वय पर बल दिया। कॉम्ट के अनुसार प्रत्यक्षवाद एक ऐसी प्रणाली है, जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण मानव समाज का भौतिक, बौद्धिक तथा नैतिक विकास करते हुए सामाजिक प्रगति की दिशा में आगे बढ़ना है। जन-कल्याण में वृद्धि करने के लिए धर्म का दृष्टिकोण भी उसी तरह मानवतावादी है जिस प्रकार प्रत्यक्षवाद मानवतावाद और प्रगति को अपना अन्तिम लक्ष्य मानता है। जब धर्म तथा विज्ञान का लक्ष्य समान रूप से जन-कल्याण में वृद्धि करना है तो इनके बीच एक समन्वय का होना स्वाभाविक है।

(6) **सामाजिक पुनर्निर्माण का साधन**—कॉम्ट ने प्रत्यक्षवाद को केवल एक विशुद्ध ज्ञान के रूप में स्पष्ट नहीं किया बल्कि उन्होंने इसे एक ऐसे उपयोगितावादी ज्ञान (Utilitarian Knowledge) के रूप में स्पष्ट किया जिसके द्वारा मानवता के कल्याण के लिए सामाजिक पुनर्निर्माण को प्रोत्साहन दिया जा सके। प्रत्यक्षवाद को सामाजिक पुनर्निर्माण का एक प्रभावशाली साधन बनाने के लिए कॉम्ट ने सन् 1848 में एक प्रत्यक्षवादी समाज के विकास पर भी बल दिया जिसमें असुरक्षा और स्वार्थ की जगह सद्भावना और परोपकार का अधिक महत्व हो। कॉम्ट ने ऐसे समाज को 'परार्थवादी समाज' (Altruistic Society) अथवा 'दूसरों के हित के लिए जीवन व्यतीत करने वाले लोगों के समाज का नाम दिया।

(7) **ऐतिहासिक पद्धति पर आधारित**—यह सच है कि प्रत्यक्षवाद स्वयं ही अध्ययन की एक वैज्ञानिक पद्धति है लेकिन कॉम्ट ने ऐतिहासिक आधार पर इस पद्धति की रूपरेखा को स्पष्ट किया। उन्होंने यूरोप में नगर राज्यों के विस्तार, चर्च राज्यों की स्थापना तथा अन्त में लोकतन्त्र के बढ़ते हुए प्रभाव के आधार पर यह स्पष्ट किया कि प्रत्यक्षवाद सामाजिक विज्ञान का आवश्यक आधार है। उन्होंने धार्मिक तथा तात्विक स्तर के बाद प्रत्यक्षवाद को जिस तरह चिन्तन की तीसरी और अन्तिम अवस्था के रूप में स्पष्ट किया है, उससे भी यह स्पष्ट होता है कि कॉम्ट अपनी प्रत्यक्षवादी पद्धति को ऐतिहासिक पद्धति पर आधारित मानते थे।

**रॉलिन चैम्बलिस** (Rollin Chambliss) ने अपनी पुस्तक *'Social Thought'* में कॉम्ट के प्रत्यक्षवाद की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि प्रत्यक्षवाद का अलौकिक विश्वासों से कोई सम्बन्ध न होने के कारण यह अनीश्वरवादी (atheistic) है, साथ ही इसका भाग्यवाद से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका कोई आध्यात्मिक आधार न होने के कारण इसे आशावादी भी नहीं कहा जा सकता। प्रत्यक्षवाद भौतिक शक्तियों को बौद्धिक शक्तियों के अधीन मानता है, इसलिए इसे भौतिकवादी भी नहीं कहा जा सकता। व्यावहारिक रूप से प्रत्यक्षवाद का सम्बन्ध वास्तविकता से है, कल्पना से नहीं। इसका सम्बन्ध उपयोगी ज्ञान से है, सम्पूर्ण ज्ञान से नहीं। इसका सम्बन्ध केवल उन्हीं तथ्यों से है जिनका पूर्व ज्ञान किया जा सकता है। यह यथार्थ ज्ञान से सम्बन्धित है, अस्पष्ट विचारों से नहीं। यह सापेक्षिक घटनाओं से सम्बन्धित है, निरपेक्ष घटनाओं से नहीं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि प्रत्यक्षवाद चिन्तन की एक ऐसी पद्धति है जिसे सार्वभौमिक रूप से सभी के द्वारा स्वीकार किया जा सके।[1]

प्रत्यक्षवाद की उपर्युक्त प्रकृति से स्पष्ट होता है कि कॉम्ट का उद्देश्य प्रत्यक्षवाद के द्वारा मानवीय चिन्तन को धार्मिक और तात्विक विचारों से मुक्त करके सामाजिक घटनाओं के अध्ययन को वैज्ञानिक रूप देना था। इस दिशा में प्राकृतिक विज्ञानों की पद्धतियों को आधार मानते हुए उन्होंने सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में भी प्रत्यक्षवाद के रूप में उन्हीं पद्धतियों के अनुसरण पर बल दिया। कॉम्ट का प्रत्यक्षवाद एक विशुद्ध वैज्ञानिक प्रणाली से इस अर्थ में भिन्न है कि इसका उद्देश्य समाजशास्त्र को एक विशुद्ध विज्ञान (Pure Science) बनाना नहीं था। इसके आधार पर कॉम्ट सामाजिक प्रगति तथा सामाजिक पुनर्निर्माण भी करना चाहते थे। इस प्रकार कॉम्ट ने प्रत्यक्षवाद को एक विज्ञान, एक धर्म व एक राजनीति के साधन के रूप में स्वीकार किया। एक विज्ञान के रूप में प्रत्यक्षवाद का सम्बन्ध अनुभव, अवलोकन, परीक्षण तथा वर्गीकरण के द्वारा सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करना है। एक धर्म के रूप में प्रत्यक्षवाद ऐसी पद्धति है जो मानवतावादी धर्म तथा नैतिक नियमों का प्रसार करके लोगों को एक-दूसरे की सेवा करने के योग्य बना सके। प्रत्यक्षवाद का राजनीतिक रूप इसके उस उद्देश्य से सम्बन्धित है जिसके द्वारा युद्ध की सम्भावना को दूर करके विभिन्न राज्यों के बीच सद्भावना और सहयोग में वृद्धि की जा सके। स्पष्ट है कि कॉम्ट ने अपने प्रत्यक्षवाद को आरम्भ में जहाँ वैज्ञानिक चिन्तन की एक प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया था वहीं आगे चलकर उन्होंने इसे धर्म और नीति से इस प्रकार मिला दिया कि इसकी वैज्ञानिकता में सन्देह किया जाने लगा।